पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका

वर्ष: 1 अंक : 1, अप्रैल, 2021 कुल पृष्ठ: 15

Visit us: **www.pashupalakmitra.in**

पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका

संपादिकीय पैनल

प्रधान संपादक

डॉ. सतीश कुमार पाठक
असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

संपादक

पशु प्रजनन एवं मादा रोग विशेषज्ञ

1. **डॉ.आशुतोष त्रिपाठी**
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   स.व.प. कृषि वि.वि., मेरठ
2. **डॉ. विकास सचान**
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा

पशु पोषण विशेषज्ञ

1. **डॉ. दिनेश कुमार**
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   जे.एन.के.वि.वि., जबलपुर

पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विशेषज्ञ

1. **डॉ. ममता**
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा

वर्ष:1 अंक:1 अप्रैल, 2021

क्रमांक	लेख का शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	**पशु प्रजनन में खनिज मिश्रण का महत्व** : डॉ.अवनीश कुमार सिंह, डॉ. महेश कुमार	3-4
2.	**मादा पशुओं में गर्भाधान के समय ध्यान रखने योग्य बातें :** डॉ.विकास सचान	5-6
3.	**मुर्गियों की गर्मी में देखभाल (Summer Management of Poultry):** डॉ. सतीश कुमार पाठक	7-9
4.	**बकरीआजीविका का एक सुरक्षित स्रोत:** डॉ .ममता, डॉ .रजनीश सिरोही एवं डा. दीप नारायण सिंह	10-13
5.	**भैंसों की गर्मी में देखभाल करने के लिए कुछ दिशानिर्देश:**डॉ. सतीश कुमार पाठक	14

नोट: लेख में वर्णित सूचनाओं का दायित्व लेखक का होगा, संपादक का नही ।

संपर्क सूत्र

डॉ. सतीश कुमार पाठक,
पशुशरीर रचना शास्त्र विभाग , पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
मिर्जापुर-231001,
उत्तर प्रदेश
ईमेल आई डी:
pashupalakmitra1@gmail.com

Visit us: www.pashupalakmitra.in

पशु प्रजनन में खनिज मिश्रण का महत्व

डॉ. अवनीश कुमार सिंह, डॉ. महेश कुमार
मादा पशु प्रजनन रोग विभाग दुवासू, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

ग्रामीण परिवेश में रहने वालें लोगों के जीविकोपार्जन में पशुपालन की अहम भूमिका है। पशुपालन में सबसे बड़ी समस्या प्रजनन विकार (पशु का गर्मी में ना आना, गर्भ का ना ठहरना, अंडाशय में रसौली, गर्भपात, जेर का अटकना, मद चक्र अनियमितता, कठिन प्रसव, गर्भाशय भ्रंश, गर्भाशय शोध आदि) है, जिसका एक कारण पशुओं में विटामिन व खनिज तत्वों की कमी भी हैं, जो इस प्रकार हैं-

विटामिन-ए :- यह बच्चेदानी की अंदरूनी परतों को स्वास्थ्य रखने में मददगार होती हैं। इसकी कमी से यौवनावस्था एवं यौवन परिपक्कता में विलम्ब, गर्भपात, भ्रूण की म्रत्यु, जेर का अटकना, मद चक्र अनियमितता, गर्भाशय शोध आदि विकार हो सकते हैं ।

विटामिन-डी$_3$:- यह जी. एन. आर. एच. हार्मोन के स्राव के लिए बहुत प्रभावी होती हैं। इसकी कमी से यौवन परिपक्कता में विलम्ब होने की सम्भावना रहती हैं ।

विटामिन-ई :- यह शरीर में बनने वाले ऑक्सीकारक तत्वों जो कि कोशिकाओं के लिए हानिकारक होते हैं उनको नष्ट करने, मादा पशुओं में भ्रूण को स्वास्थ्य रखने, जेर को समय से निकलने, मद चक्र को सामान्य रखने के साथ नर पशुओं के वृषण को स्वास्थ्य रखने में भी मदद करती हैं।

कैल्शियम :- इसकी कमी से गर्भाशय की मांसपेशियां शिथिल हो जाती है जिसके फलस्वरूप कठिन प्रसव, जेर का अटकना, गर्भाशय भ्रंश तथा प्रसव के बाद गर्भाशय पूर्वावस्था में देर से आने से अगला बच्चा देर से होना आदि विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

फास्फोरस :- यह पशुओं की प्रजनन क्षमता को बढाने में मदद करता हैं। इसकी कमी से यौवनावस्था एवं यौवन परिपक्कता में विलम्ब, पशु का गर्मी में ना आना, गर्भ का ना ठहरना तथा बांझपन आदि विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

कोबाल्ट :- कोबाल्ट की कमी से पशु का विकास धीमी गति से होता हैं जिसके फलस्वरूप यौवन परिपक्कता एवं प्रथम मद में विलम्ब, प्रसव के बाद गर्भाशय पूर्वावस्था में देर से आना, अनियमित मदचक्र, गर्भ का ना ठहरना आदि विकार उत्पन हो सकते हैं।

कॉपर :- इसकी कमी से पशु का विकास धीमी गति से होना, प्रजनन क्षमता कम होना, रोगप्रतिकारक क्षमता कम होना, यौवनारम्भ देर से होना, गर्भ का ना ठहरना, भ्रूण की म्रत्यु , जेर का अटकना आदि समस्याएं आ सकती है।

जिंक :- इस तत्व की कमी से भूख एवं प्रजनन क्षमता में कमी, पशु का विकास रुक जाना, वृषन का विकास न होना, अंडाशय का विकास न होना, मद चक्र मे अनियमितता, गर्भाधारण मे विलम्ब आदि विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

मैंगनीज :- इस तत्व की कमी से पशु की प्रजनन क्षमता व गर्भधारण की दर मे कमी के साथ पशु का गर्मी में रहना परन्तु गर्मी के लक्षण न दिखना आदि विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

सेलेनियम :- इसकी कमी से जेर का अटकना, गर्भाशय खराब होना, अंडाशय में रसौली, अनियमित मदचक्र, गर्भधारण न होना, रोगप्रतिरोधक क्षमता मे कमी तथा दुग्ध उत्पादन में गिरावट आना आदि विकार उत्पन्न हो सकते हैं।

आयोडीन :- इसकी कमी से गर्भपात, भ्रूण की म्रत्यु आदि विकार उत्पन हो सकते हैं।

सुझाव :-

इस लेख का अभिप्राय पशुपालकों में जागरूकता लाना है कि “रोकथाम इलाज से बेहतर है”- पशुओं के बेहतर स्वास्थ्य एवं प्रजनन में विटामिन व खनिज तत्वों की अहम भूमिका है, अत: पशुपालक खनिज मिश्रण का उपयोग समस्या के होने पर एक दवा के रुप में नहीं बल्कि पशु के दैनिक राशन में पूरक की तरह करें। गाय और भैंस को रोजाना ३०-५० ग्राम एवं छोटे पशुओं को २०-२५ ग्राम की दर से प्रति पशु रोजाना गुणवत्तापरक खनिज मिश्रण खिलाना लाभदायक होता है। किसी प्रजनन विकार होने पर अपने नजदीकी पंजीकृत पशु चिकित्सक से तुरन्त परामर्श लेना चाहिए।

मादा पशुओं में गर्भाधान के समय ध्यान रखने योग्य बातें

डॉ.विकास सचान
सहायक आचार्य, वेटरनरी विश्वविद्यालय, मथुरा

मादा गाय एवं भैंस को मुख्यतः पशुधन एवं दुग्ध उत्पादन के लिए पाला जाता है। मादा पशु के उचित समय में गर्मी (मद) में आना एवं उचित समय पर गर्भाधान (कृतिम अथवा प्राकृतिक) करवाकर अधिक से अधिक लाभ लिया जा सकता है। परन्तु पशुओं मे मद के लक्षण एवं गर्भाधान के उचित समय के सम्बन्ध में पशुपालको को कम जानकारी होने के कारण कई तरह के नुकसान का सामना भी करना पड़ता है। इस लेख (प्रश्नोत्तरी) का अभिप्राय पशुपालको को उक्त सम्बन्ध में कुछ आधारभूत जानकारियां प्रदान करना है।

प्रश्न - गाय और भैंसों में मदकाल के लक्षण क्या हैं और गर्भाधान का उचित समय क्या है?

उत्तर- पतला श्लेष्म या जेरी आना, बार बार रंभाना, अधिक बेचैनी, दूध का कम होना/ डोंका करना (थानों में कम मात्र में परन्तु बार बार दूध का उतरना), दूसरे पशुओं पर चढ़ना, दूसरे पशु के चढ़ने पर शांत खड़े रहना, चारा कम खाना, शारीरिक ताप में मामूली वृद्धि होना, बार बार मूत्र त्याग करना, इत्यादि मदकाल के लक्षण हैं। पशु में इनमे से एक, दो या कई लक्षण मद के समय देखे जा सकते हैं। इनमे से सर्वोत्तम लक्षण दुसरे पशु के चढ़ने पर शांत खड़े रहना माना जाता है। ये मदकाल सामान्यतः केवल 12 से 18 घंटो का होता है। श्लेष्म स्राव के पतले एवं पानी की तरह साफ़ होने पर ही गर्भाधान कराना चाहिए। श्लेष्म स्राव आने या अन्य लक्षण दिखने के २४ घंटे के भीतर गर्भाधान करवा लेना चाहिए। अधिक देर करने पर अंडे के निकल जाने या उसके मृत हो जाने पर गर्भ रूकने के आसार कम या न के बराबर हो जाते हैं। श्लेष्म स्राव या जेरी के गंदे, सफ़ेद या थोड़ा पीलेपन में होने पर गर्भाधान पशुचिकित्सक की सलाह के बाद ही कराना चाहिए। ब्यांत तथा गर्भधान के बीच कम से कम 60 दिनों का अंतर रखना आवश्यक है।

प्रश्न - प्रथम बार पशु को गर्भित कराने के समय किन चींजों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर- प्रथम बार गर्भाधान के समय गायों की उम्र कम से कम ढाई साल तथा वजन औसतन 250 किलो और भैंसों की उम्र तीन या साढ़े तीन साल तथा वजन 275 किलो के लगभग होना चाहिए। पशु में प्रथम मद काल दिखाई देने पर उसे गर्भित नहीं कराना चाहिए । उस समय मादा पशु का गर्भाशय पूर्ण विकसित ना होने के कारण गर्भ ठहरने के आसार काम होते हैं । अतः दो या तीन मद छोड़ने के पश्चात ही पशु को गर्भाधान कराना चाहिए । गर्भाधान के पहले पशु को पेट के कीड़ों अर्थात अंतःपरजीवी को मारने की दवा और पोषक खनिजों की पर्याप्त मात्र चारे के साथ देनी चाहिए । गर्भाधान के समय संक्रमित सांडो, अनुचित तरीकों तथा जीवाणु युक्त यंत्रो का प्रयोग नहीं करना चाहिए । गर्भाधान के पहले और बाद में कम से कम 15 मिनट पशु को शांत रखना चाहिए । गर्भाधान के बाद पशु की पीठ और पिछले हिस्से में ठंडा पानी डालने से उसके गर्भित होने की आसार बढ़ जाते हैं । अधिक शोर शराबे तथा तनावयुक्त वातावरण में गर्भाधान करने से पशु के गर्भित होने के आसार कम होते हैं ।

प्रश्न - पशु के मद में ना आने के क्या कारण होते है?

उत्तर- सामान्यतः गर्भावस्था, गर्भाशय में संक्रमण और मवाद भर जाना, गर्भित शिशु का गर्भ में ही मर जाना, गर्मी का सही समय पर अवलोकन ना करना, किसी प्रकार का रोग होना, निष्क्रिय अंडाशय होना, अधिक दुग्ध उत्पादन के कारण तनाव होना, अंतः तथा वाहयपरजीवी का होना, अंतःस्रावी ग्रंथियों का कार्य ना करना, असंतुलित हॉर्मोन, पुटिय अंडाशय, असंतुलित चारे में पौष्टिक तत्वों की कमी होना, किसी भी कारण से पशु का तनावग्रस्त होना आदि पशु के मद काल में ना अने के कारण होते हैं ।

जब भी पशुपालक का मादा पशु गर्मी में आये तो उक्त जानकारियों की मदद से गर्भाधान को सफल बनाया जा सकता है जिससे पशुपालक अधिक से अधिक लाभ कमा सकता है ।

मुर्गियों की गर्मी में देखभाल (Summer Management of Poultry)

डॉ. सतीश कुमार पाठक
सहायक आचार्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

गर्मी मुर्गियों की प्रतिरक्षण क्षमता को कम कर देता है जिससे मुर्गियों को विभिन्न बीमारियों जैसे-ई. कोलाई (E. coli) और सी° आर° डी° (CRD) इत्यादि के होने का खतरा बढ़ जाता है । गर्मी से मुर्गियों में निम्न लक्षण प्रदर्शित हो सकते है-

➢हाँफना या तेज गति से साँस लेना

➢बार-बार और ज्यादा पानी पीना

➢भूख का कम हो जाना

➢अंडे का उत्पादन कम हो जाना

➢अंडे की खोल की खराब गुणवत्ता का होना

➢ब्रायलर मुर्गियों के शरीर का वजन धीमी गति से बढ़ना

➢शरीर का तापमान बढ़ जाना

➢मृत्यु होना

गर्मी का प्रभाव कम करने के उपाय

गर्मी के प्रभाव को मुर्गियों पर कम निम्न तरीकों से किया जा सकता है-

1. आवासीय प्रबन्धन
2. जल प्रबन्धन
3. आहार प्रबन्धन
4. सामान्य प्रबन्धन

1. आवासीय प्रबन्धन:

➢मुर्गियों का आवास पूर्व से पश्चिम की तरफ होना चाहिए जिससे सूर्यातप एवं सूर्य की रोशनी का प्रत्यक्ष प्रभाव को कम किया जा सके ।

➢मुर्गियों के आवास की छत कुचालक पदार्थ की बनी होनी चाहिए ।

➢हवा के नियमित संचार के लिए कूलर पंखे या निकास पंखे (exhaust fan) होने चाहिए ।

➢आवास की छत को सफेद रंग से पेन्ट करना चाहिए जिससे सूर्य की रोशनी का परावर्तन (reflection) हो ।

2. जल प्रबन्धन:

➢सामान्यता आहार और पानी का अनुपात 1:2 होता है लेकिन गर्मी बढ़ने पर यह अनुपात 1:4 या उससे भी अधिक हो सकता है ।

➢साफ और ठंडे पानी (60-70°F) की उपलब्धता हमेशा होनी चाहिए ।

➢नये चूजों को फार्म में आते ही ठंडा पानी एवं इलेक्ट्रोलाइट को आहार देने से पहले पिलाना चाहिए ।

➢पानी की टंकी को जूट के भीगे बोरों से ढकना चाहिए

3.आहार प्रबन्धन:

➢आहार की आवृत्ती (frequency) को बढ़ाना चाहिए ।

➢आहार में पोषक तत्वों के घनत्व को बढ़ाना चाहिए जिससे कम खाने के प्रभाव को कम किया जा सके ।

➢आहार में क्रूड प्रोटीन की मात्रा बढ़ा देना चाहिए ।

➢20 से 30% अतिरिक्त विटामिन एवं अल्प खनिज लवण की मात्रा आहार में बढ़ा देना चाहिए ।

➢अंडे देने वाली मुर्गियों में कैल्सियम का स्तर आहार में 3 से 3.5% तक बढ़ा देना चाहिए ।

4. सामान्य प्रबन्धन:

➢मुर्गियों की बिछाली (litter) प्रमुख रूप से दो इंच की मोटाई का होना चाहिए और इसे समय-समय पर पलटते तथा बदलते रहना चाहिए ।

➢गर्मियों में 10% अतिरिक्त आवासीय स्थान प्रदान करना चाहिए जिससे मुर्गियों के बीच ज्यादा भीड़ न होने पाये ।

➢स्थानांतरण, चोंच काटना तथा टीकाकरण जैसे कार्य रात के समय या दिन के ठंडे समय में करना चाहिए ।

➢आवास के साइड में पर्दे लगाना चाहिए जिस पर समय-समय पर पानी की बौछार करते रहना चाहिए ।

➢आवास के चारों तरफ छाँयेदार वृक्ष होने चाहिए ।

इस तरह हम उपरोक्त उपायों को अपनाकर मुर्गियों पर गर्मी के प्रभाव को कम कर सकते है ।

बकरीआजीविका का एक सुरक्षित स्रोत

डॉ.ममता, डॉ.रजनीश सिरोही एवं डा. दीप नारायण सिंह
सहायक आचार्य, दुवासु, मथुरा

हम सभी जानते हैं कि बकरियां बहुआयामी पशुधन हैं जिनसे कई प्रकार के उत्पादों का उत्पादन किया जा सकता है जैसे, दूध, मांस, फाइबर, खाद आदि। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब या आम आदमी की 'गाय' के नाम से प्रचलित बकरी इसके पालन के लाभों को दृष्टिगत रखते हुए हमेशा से ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है । इस लेख में बकरी पालन के लाभों का उल्लेख निम्नवत किया गया है। हम सभी जानते हैं कि बकरियां बहुआयामी पशुधन हैं जिनसे कई प्रकार के उत्पादों का उत्पादन किया जा सकता है जैसे, दूध, मांस, फाइबर, खाद आदि। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब या आम आदमी की 'गाय' के नाम से प्रचलित बकरी इसके पालन के लाभों को दृष्टिगत रखते हुए हमेशा से ही आजीविका के सुरक्षित स्रोत के रूप में पहचानी जाती रही है । इस लेख में बकरी पालन के लाभों का उल्लेख निम्नवत किया गया है।

बकरी पालन के लाभः

1. बकरी उत्पाद स्वस्थ और आसानी से पचने योग्य होते हैं

बकरी के उत्पाद जैसे दूध और मांस न केवल पौष्टिक और आसानी से पचने योग्य होते हैं, बल्कि गरीब, भूमिहीन और सीमांत किसानों के लिए नियमित आय का एक बड़ा स्रोत हैं। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय आय में बहुत योगदान देता है। इसका मांस और दूध कोलेस्ट्रॉल मुक्त और आसानी से पचने योग्य होता है। बकरी के दूध का उपयोग विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ बनाने के लिए किया जाता है। वे एक ही समय में दूध, मांस, त्वचा, फाइबर और खाद का उत्पादन कर सकती हैं।

2. आसान रखरखाव और कम पूंजी

छोटा जानवर होने के कारण इसके रख-रखाव में लागत भी कम होती है । सूखा पड़ने के दौरान भी इसके खाने का इंतजाम सरलता से हो सकता है। इसकी देखभाल का कार्य भी महिलाएं एवं बच्चे आसानी से कर सकते हैं और साथ ही जरुरत पड़ने पर इसे आसानी से बेचकर अपनी जरूरत भी पूरी की जा सकती है। सूखे की वजह से जहा बड़े जानवरों के लिए चारा आदि की समुचित व्यवस्था आदि करना एक मुश्किल कार्य होने के वजह से ऐसे इलाको मे लोग अब बकरी पालन को प्राथमिकता दे रहे है । उदाहरण के लिये उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के अधिकतर लघु एवं सीमांत किसान आय कम होने के कारण सपरिवार एक या दो जानवर अवश्य पालते हैं, ताकि उनके लिए दूध की व्यवस्था होती रहे. इनमें गाय, भैंस और बकरी आदि शामिल होती हैं ।एक सफल बकरी किसान होने के लिए, किसी को कुछ सामान्य कार्य करने की आवश्यकता होती है जैसे कि, खिलाना, दूध देना और देखभाल करना। इन कार्यों में अधिक उपकरण, पूंजी, श्रम या कड़ी मेहनत की आवश्यकता नहीं होती है। निवेश अनुपात पर उनका रिटर्न भी बहुत अच्छा है। चूंकि बकरी पालन व्यवसाय बहुत लाभदायक है, इसलिए कई सरकारी और गैर सरकारी बैंक इस व्यवसाय को शुरू करने के लिए ऋण दे रहे हैं। ज्यादातर लोग खेती किसानी के साथ बकरी पालन का कार्य करते हैं। ऐसी स्थिति में ये बकरियां खेतों और जंगलों में घूम-फिर कर अपना भोजन आसानी से प्राप्त कर लेती है। अतः इनके लिए अलग से दाना-भूसा आदि की व्यवस्था बहुत कम मात्रा में करनी पड़ती है। दो से पांच बकरी तक एक परिवार बिना किसी अतिरिक्त व्यवस्था के आसानी से पाल सकता है। घर की महिलाएं बकरी की देख-रेख आसानी से कर सकती हैं और खाने के बाद बचे जूठन से इनके भूसा की सानी कर दी जाती है। ऊपर से थोड़ा बेझर का दाना मिलाने से इनका खाना स्वादिष्ट हो जाता है।

3. एक विशाल क्षेत्र की आवश्यकता का न होना

अपने छोटे शरीर के आकार के कारण बकरियों को आवास के लिए एक विशाल क्षेत्र की आवश्यकता नहीं होती है। वे आसानी से अपने मालिकों या अपने अन्य पशुओं के साथ अपने रहने की जगह साझा कर सकती हैं। कुल मिलाकर बकरियां अन्य घरेलू जानवरों के साथ मिश्रित खेती के लिए बहुत उपयुक्त हैं। बकरी पालन करने के लिए पशुपालक को अलग से किसी आश्रय स्थल की आश्यकता नहीं पड़ती। उन्हें वो अपने घर पर ही आसानी से रख सकते हैं। बड़े पैमाने पर यदि बकरी पालन का कार्य किया जाएं, तब उसके लिए अलग से बाड़ा बनाने की जरुरत पड़ती है।

4. प्रजनन क्षमता

बकरियां न केवल प्रकृति के बहुत अनुकूल हैं, बल्कि उत्कृष्ट प्रजनक भी हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वे अपनी 7-12 महीने की उम्र में यौन परिपक्वता तक पहुंच जाते हैं और थोड़े समय के भीतर बच्चों को जन्म देते हैं। इसके अलावा, कुछ बकरी की नस्ल प्रति ब्यात पर कई बच्चे पैदा करती है। एक बकरी लगभग डेढ़ वर्ष की उम्र में बच्चा प्रजनन करने की स्थिति में आ जाती है और 6-7 माह में प्रजनन करती है। प्रायः एक बकरी एक बार में 3 से 4 बच्चों का प्रजनन करती है और एक साल में दो बार प्रजनन करने से इनकी संख्या में वृद्धि होती है। बच्चे को एक वर्ष तक पालने के बाद ही बेचा जाता है।

5. कम जोखिम

किसी अन्य पशुधन कृषि व्यवसाय की तुलना में बकरी पालन के लिए सूखा प्रभावित क्षेत्रों में भी कम जोखिम है। बकरियों को आवश्यकतानुसार दूध लिया जा सकता है जोकि दूध भंडारण समस्याओं को भी रोकता है।

6. बाजार में समान मूल्य

किसी अन्य पशुधन की तुलना में बाजार में नर और मादा दोनों बकरियों का मूल्य लगभग बराबर होता है । इसके अलावा, बकरी पालन और मांस की खपत के प्रति कोई धार्मिक निषेध भी नहीं है। इसलिए, व्यावसायिक बकरी पालन ने बेरोजगार लोगों के लिए रोजगार का एक संभावित विकल्प उपलब्ध किया है। उनके मांस की स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भारी मांग और आकर्षक मूल्य है।

7. अनुकूलता

बकरियां लगभग सभी प्रकार के कृषि जलवायु वातावरण और स्थितियों के साथ खुद को ढालने में बहुत सक्षम हैं। अन्य पशुओं की तुलना मे इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है और वे उच्च और निम्न तापमान को भी सहन करते हुए रह सकती हैं।

8. गुणकारी दुग्ध निर्माता

इस गुण के कारण, बकरियों को लोकप्रिय रूप से “मानव की पालक माँ” कहा जाता है। उनके दूध को पशुओं के दूध की किसी भी अन्य प्रजाति की तुलना में मानव उपभोग के लिए सबसे अच्छा दूध माना जाता है। दूध कम लागत वाला, पौष्टिक, पौष्टिक और आसानी से पचने वाला होता है। वास्तव में, बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी वृद्ध लोग बकरी के दूध को आसानी से पचा सकते हैं। बकरी के दूध से एलर्जी की समस्या भी कम होती है। यह उन लोगों के लिए एक आयुर्वेदिक दवा के रूप में भी उपयोग किया जाता है जो मधुमेह, अस्थमा, खांसी आदि से पीड़ित हैं।

9. प्राकृतिक उर्वरक

बकरी की खाद का उपयोग फसल के क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाले प्राकृतिक उर्वरक के रूप में किया जा सकता है जो सीधे फसल उत्पादन को अधिकतम करने में मददगार होता है ।

बकरी पालन से जुड़े ये लाभ बकरी पालन को कम पूंजी में एक सफल व्यवसाय की शुरुआत की अनुकूलता को इंगित करते हैं। बकरी पालन को इसकी बहु-उपयोगिता और तेजी से बढ़ती दर के कारण पारंपरिक, लाभदायक, कम-जोखिम और बहुत आसान व्यवसाय के रूप में संपन्न किया जा सकता है। इसका उपयोग गरीबी उन्मूलन के लिए एक उपकरण के रूप में भी किया जाता है और यह देश की आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भैंसों की गर्मी में देखभाल करने के लिए कुछ दिशानिर्देश

डॉ. सतीश कुमार पाठक

सहायक आचार्य, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

भैंसों की गर्मी में देखभाल करने के लिए निम्न प्रमुख बातों का ध्यान रखना चाहिए

- भैंसों के आवास के चारों तरफ छायादार वृक्ष होने चाहिए
- भैंसों के आवास हवादार होने चाहिए ।
- भैंसों के नहाने के लिए तालाब या घर पर ही प्रतिदिन स्नान कराना चाहिए, अत्यधिक गर्मी में ठंडे पानी की बौछार भी लाभदायक सिद्ध होगी ।
- गर्मी से बचाव के लिए ठंडा और साफ पानी की उपलब्धता सदैव रहनी चाहिए ।
- भैंसों को तेज धूप में बाहर ले जाने से बचना चाहिए ।
- भैंसों को हरे चारे को सूखे चारे में मिलाकर खिलाना चाहिए ।
- भैंसों को चराने के लिए सुबह या शाम को ही बाहर ले जाना चाहिए, जब धूप की तीव्रता कम हो ।
- भैंसों के आहार में खनिज लवण की प्रयाप्त मात्रा का मिश्रण होना चाहिए ।
- गर्भवती भैंसों को आहार का विशेष ध्यान रखना चाहिए ।
- भैंसों को रात में खिलाने का प्रबंध करना चाहिए, क्योकि गर्मियों में दिन में जानवर कम खाते है ।
- भैंसों की गर्मी (estrous) का पता लगाने के लिए दिन में तीन बार निरीक्षण करना चाहिए और कम से कम एक बार रात को भी ।
- कृत्रिम गर्भाधान के लिए सुबह या शाम का ठंडा समय उपयुक्त होता है ।
- गाभिन न होने वाली भैंसों के योनि से होने वाले स्राव का अच्छी तरह से निरीक्षण करना चाहिए, कुछ भी असमान्य दिखने पर पशुचिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए ।
- कृत्रिम गर्भाधान के बाद पहले 15 दिन तक भैंस को ठंडे वातावरण में रखना चाहिए ।

लेख भेजने के लिए निर्देश :

1. लेख हिन्दी में मंगल फॉन्ट एवं microsoft word में होने चाहिये ।
2. लेख पशुपालन से संबन्धित होना चाहिये।
3. लेख के प्रकाशन का निर्णय संपादक का होगा।
4. लेख का प्रकाशन निः शुल्क होगा ।
5. लेख को प्रकाशन के लिए ईमेल आई डी pashupalakmitra1@gmail.com पर भेजना होगा ।
6. लेखक को निम्न प्रारूप में एक स्वहस्ताक्षरित प्रमाण पत्र लेख के साथ सलग्न करना होगा **प्रमाणित किया जाता है कि संलग्न लेख...शीर्षक................ लेखक ...लेखक का नाम .... द्वारा लिखित एक मौलिक, अप्रकाशित रचना है, तथा इसे प्रकाशन के लिए किसी अन्य पत्रिका में नही भेजा गया है।**
7. लेख में वर्णित सूचनाओं का दायित्व लेखक का होगा , संपादक का नही